जंतुओं को थोड़ी राहत मिली

आप जिन सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग करते हैं, उनकी जांच के लिए हज़ारों खरगोश और चूहों को यातनाएं झेलनी पड़ती हैं। अब उन्हें इससे थोड़ी राहत मिली है। आम तौर पर सौंदर्य प्रसाधन कम्पनियां यह जांचने के लिए इन जंतुओं का उपयोग करती हैं कि उनके द्वारा बनाए गए प्रसाधन कहीं आंखों में जलन या चमड़ी पर एलर्जी तो पैदा नहीं करते। कोई नई सामग्री बाज़ार में उतारने से पहले ऐसी जांच की जाती है।

अलबत्ता इस वर्ष से युरोप में इनमें से कई परीक्षणों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। वैकल्पिक विधियों के प्रमाणीकरण के लिए इटली में एक केंद्र है। इस केंद्र ने पांच परीक्षणों के विकल्प सुझाए हैं और विकल्प उपलब्ध हो जाने पर पूर्व में की जाने वाली जांच पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

केंद्र ने जो वैकल्पिक परीक्षण सुझाए हैं उनमें से दो ऐसे हैं जिनके लिए जीवित जंतु की बजाय बूचड़खाने से प्राप्त ऊतक से काम चल जाएगा। ये परीक्षण उन रसायनों के लिए हैं जिनमें आंखों में जलन पैदा करने वाले रसायनों की जांच की जाती है।

दो ऐसे वैकल्पिक परीक्षण सुझाए गए हैं जिनमें प्रयोगशाला में संवर्धित कोशिकाओं से काम चलाया जा सकेगा। ये मूलतः त्वचा को उत्तेजित करने वाले रसायनों के लिए हैं। युरोप में हर साल 20,000 जंतुओं पर ये परीक्षण किए जाते थे। एक अन्य परीक्षण एलर्जी से सम्बंधित था। इसका विकल्प मिल जाने से भी हज़ारों जंतु बच जाएंगे।

वैसे तो उपरोक्त पांचों वैकल्पिक परीक्षण बरसों से उपलब्ध रहे हैं मगर कम्पनियां इनका उपयोग नहीं करती थीं क्योंकि इनका प्रमाणीकरण नहीं हुआ था। दरअसल इटली के उक्त केंद्र ने प्रयोग करके प्रमाणित कर दिया है कि ये वैकल्पिक परीक्षण पूर्व के परीक्षणों से बेहतर ही हैं।

आम तौर पर वैज्ञानिक समुदाय में जीवित जंतुओं पर प्रयोग करने के मामले में जागरूकता बढ़ रही है और इसी के परिणामस्वरूप विकल्पों की खोज में तेज़ी आई है। वैसे अभी भी स्थिति यह है कि कम्पनियों को कुछ ऐसे परीक्षण करने की छूट रहेगी। मगर युरोपीय संघ ने तय किया है कि विकल्प हों या न हों, वर्ष 2009 तक ऐसे सारे परीक्षण बंद कर दिए जाएंगे। यदि उससे पहले ही विकल्प खोज लिया जाता है तो प्रतिबंध जल्दी लगाया जा सकता है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***